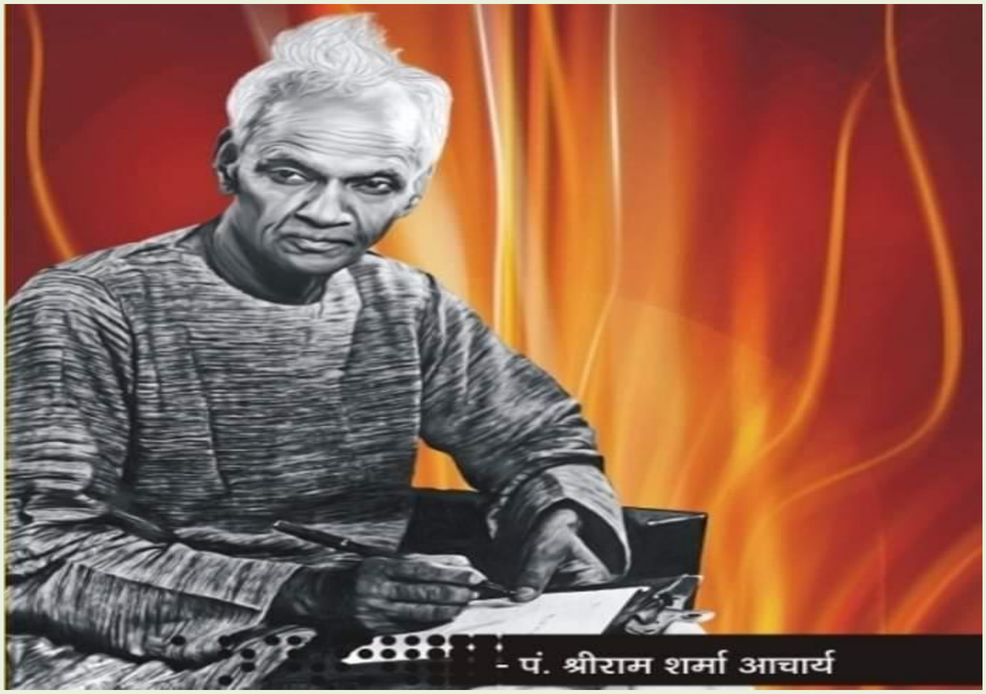


परम पूज्य गुरुदेव के महाप्रयाण पर विशेष श्रद्धांजलि

अखंड ज्योति जुलाई 1990, पृष्ठ 56-58

करबद्ध क्षमा याचना

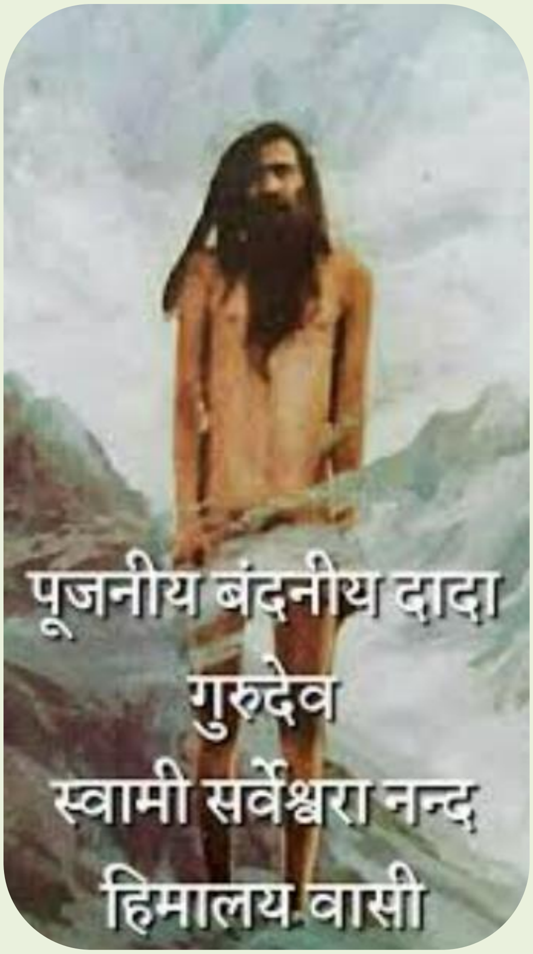
ऑनलाइन ज्ञानरथ गायत्री परिवार द्वारा यह तुच्छ सा प्रयास परम पूज्य गुरुदेव के प्रति श्रद्धांजलि है। इस प्रस्तुति का आधार अखंड ज्योति जुलाई 1990 का अंतिम लेख "परम पूज्य गुरुदेव का महाप्रयाण" है। इस लेख की Text copy उपलब्ध न होने के कारण, scan copy का प्रयोग किया गया है जिसमें कुछ शब्द ठीक से स्कैन नहीं हुए थे। हमने अपने विवेक के अनुसार वाक्यों का चयन करने का साहस दिखाया है ,पाठकों को निवेदन है कि अगर कोई त्रुटि दिखे तो हमें तुरंत सूचित करें ताकि हम संशोधन कर सकें।

इस लेख में वर्णित समस्त जानकारी, Figures आदि 1990 की है, 2023 में प्रकाशन समय बहुत कुछ बदल चुका है,पाठकों से निवेदन है कि latest जानकारी के लिए यह साइट विजिट करें।

ऑनलाइन ज्ञानरथ गायत्री परिवार

परम पूज्य गुरुदेव का महाप्रयाण

एक युग पुरुष जिसने लगभग पौन शताब्दी तक करोड़ों व्यक्तियों को ममत्व के सूत्र में बांधे रख एक परिवार के रूप में संगठित कर दिया, विगत गायत्री जयन्ती (2 जून 1990) के पावन दिन प्रातः 8 बजे महाप्रयाण कर गया। वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जिन्हें परिजन श्रद्धा से पुज्य गुरुदेव नाम से संबोधित करते रहे हैं, के पार्थिव शरीर को उसी दिन सायंकाल 5:30 बजे लगभग 5000 परिजनों की उपस्थिति में उन्ही के द्वारा निर्मित सजल श्रद्धा-प्रखर प्रज्ञा नामक स्मारकों के समक्ष अग्नि को समर्पित कर दिया गया। इस प्रकार स्थूलकाया की 80 वर्ष की एक सुनियोजित यात्रा समाप्त हुई ।विश्व्यापी,विशाल गायत्री परिवार



संस्थापक और संचालक होने के नाते उनके प्रत्यक्षतः हमारे बीच से चले जाने से परिजनों का शोकाकुल होना स्वाभाविक है लेकिन उनसे जुड़े सभी परिजन यदि उनके जीवन से जुड़े विविधतापूर्ण , चमत्कारी घटनाक्रमों , महत्वपूर्ण प्रसंगों पर दृष्टि डालेंगे तो उन्हें अनुभव होगा कि उनके जीवन का हर निर्धारण अपने मार्गदर्शक (हिमालय वासी सर्वेश्वरानन्द जी जिन्हें गायत्री परिजन दादा गुरु कह कर सम्बोधित करते हैं) के संकेतों के अनुसार सुनियोजित क्रम से होता आ रहा है।

1985 में हीरक जयन्ती (Diamond Jubilee) वर्ष के समापन पर उन्होंनें पत्रिकाओं में लिख ही दिया था कि

"हमारे मार्ग दर्शक ने हमारी स्थूल काया को पाँच वर्ष का एक्सटेंशन दे दिया है। तत्पश्चात् हमारा सूक्ष्म व कारण शरीर सक्रिय होगा एवं घनीभूत प्राण ऊर्जा के रूप में चारों ओर सक्रिय होकर वह सब करेगा जो चमड़े की इस काया द्वारा संभव नहीं है।"

इन शब्दों पर संभवतः उस समय विरलों का ध्यान गया होगा लेकिन जिस प्रकार सूक्ष्मीकरण साधना के तुरन्त बाद गुरुदेव ने अपनी गतिविधियों में तीव्रता लाकर भारत भर में राष्ट्रीय एकता सम्मेलनों तथा दीपयज्ञों का ताना-बाना बुना था, शांतिकुंज परिसर में

विस्तार क्रम आरंभ किया था और फिर क्रमशः अपने सारे उत्तरदायित्व वन्दनीय माताजी को सौंपते हुए इस वर्ष बसंत पंचमी से मिलने-जुलने का क्रम बन्द कर दिया था, उससे भली-भाँति पूर्वानुमान लगाया जा सकता है कि परम पूज्य गुरुदेव किसी योजना में कार्यरत हैं। जिन परिजनों ने वर्ष 1990 जनवरी और मार्च की अखण्ड-ज्योति पढ़ी हो तथा अप्रैल की इक्कीसवीं सदी लेखमाला का analysis किया हो उन्हें अनुमान हो गया होगा कि वसंत पर्व पर महाकाल के संदेश में दिये गये निरधारणों का ही निर्वाह हुआ था। सभी में स्पष्ट संकेत था कि गुरुदेव अब सूक्ष्म शरीर की सत्ता से ही सक्रिय रह कर परिजनों के और निकट आ

जायेंगे एवं इस वर्ष कभी भी अपनी पार्थिव देह छोड़ सकते हैं ।

यह स्पष्ट संकेत उनकी मार्गदर्शक सत्ता द्वारा(दादा गुरु) मई मास के मध्य में मिल गया कि गायत्री के सिद्ध साधक होने के नाते उन्हें अपने प्राणों को गायत्री जयन्ती और गंगा दशहरा के पावन दिन महाप्राण में विसर्जित कर देना चाहिए । जीवनभर जिसने स्वयं उच्चस्तरीय गायत्री साधना के शीर्ष तक स्वयं को पहुँचाया, अनगणित व्यक्तियों को जाति, वंश लिंग, वर्ण भेद किए बिना गायत्री उपासक बना दिया उसके लिए महानिर्वाण के लिए इससे श्रेष्ठ दिन और हो भी क्या सकता था।

इस तथ्य की कल्पना करने में भी रोम उठ खड़े होते हैं, मस्तिष्क में वेदना होने लगती है कि अब परम पूज्य गुरुदेव हमारे बीच प्रत्यक्षतः उसी रूप में नहीं हैं जिस रूप में विगत वसंत तक सबने उनके दर्शन किए। अंतरंग से बहिरंग तक स्नेह से सराबोर, निर्मल अंतःकरण वाला वह महापुरुष, हम सबका पिता अब हमें मुसकराता, खिलखिलाता, प्यार लुटाता नहीं दीख पड़ेगा, हम सबके लिए यह कल्पना भी कर पाना अत्यन्त कष्टकर है। फिर कैसे बंधी रहेगी ममत्व की वह डोर जिसने करोड़ों परिजनों को एक सूत्र में बांधे रखा था।

इस संबंध में उनका अन्तिम 15 दिनों में दिया गया यह आश्वासन हमें हिम्मत दिलाता है कि अब वे और अधिक

सघनता व निकटता से सभी को उपलब्ध होंगे। सभी को उनका स्नेह एवं प्यार भरा मार्गदर्शन, समस्याओं को सुलझाने वाला हल उनका ध्यान करने मात्र से ही उपलब्ध हो जाया करेगा क्योंकि अब वे कायपिंजर से मुक्त ही विराट से विराटतम् तथा सूक्ष्म रूप में करोड़ों गुने आकार में सारी वसुधा पर संव्याप्त हो गये हैं। उनके द्वारा आरंभ किया गया विचारक्रांति का युग परिवर्तन का सारा कार्य अब और तीव्रगति से सारे भारतवर्ष व विश्वभर में चल पड़ेगा क्योंकि यह अभियान दैवी सत्ता द्वारा संचालित शक्ति का अभियान है। व्यक्ति के न रहने पर तो काम रुक सकता है लेकिन शक्ति का कभी नाश नहीं होता, मरण नहीं होता। वह तो सूक्ष्म रूप में और सामर्थ्यवान हो जाती है एवं

अन्यान्य मनुष्यों, भावनाशीलों, लोकसेवियों के शरीरों को उपकरण बनाकर उनसे वह सारा काम करा लेती है जिसके लिए उनका अवतरण हुआ था।

वे अपनी शक्ति वंदनीय माताजी को हस्तान्तरित कर गये हैं तथा उनके माध्यम से सारे परिजनों को वही ममत्व, दैनन्दिन जीवन तथा लोकसेवा के क्षेत्र से, नवनिर्माण से जुड़ा मार्गदर्शन सतत् मिलता रहेगा। निधि के रूप में वे करोड़ों की राशि से विनिर्मित शांतिकुंज, ब्रह्मवर्चस, गायत्री तपोभूमि तथा 2400 प्रज्ञा संस्थान, 25 लाख सक्रिय भावनाशीलों का साथ तथा चिंतन चेतना के रूप में भरपूर मात्रा में साहित्य लिख कर छोड़ गये हैं। धर्म-तंत्र से लोक मानस का परिष्कार, अध्यात्म का विज्ञान सम्मत प्रतिपादन,

व्यक्ति, परिवार व समाज का नवनिर्माण करने वाला मार्गदर्शन तथा नवयुग की स्थापना के लिए तैयारी संबंधी जो संजीवनी उनकी लेखनी से प्रकट हुई थी, वह रुकी नहीं है। वह आगे भी उनकी शक्ति से अनुप्राणित हो सतत् चलती रहेगी तथा असंख्यों व्यक्तियों का मार्गदर्शन करती रहेगी। आने वाले 10 वर्षों के लिए तो साहित्य वे लिखकर रख ही गये हैं । इस संबंध में किसी को अवसाद नहीं करना चाहिए कि उनकी लेखनी का प्रकाश अब उन तक नहीं पहुँचेगा। गुरुदेव का साहित्य और अधिक प्रखर रूप में पत्रिकाओं एवं पुस्तकों के माध्यम से भारत की सभी भाषाओं में, तदुपरान्त विश्व की सभी भाषाओं में प्रकाशित होकर उपलब्ध होता रहेगा ।

समाज के नवनिर्माण तथा सतयुग की वापसी के लिए लोकसेवियों के उत्पादन की, प्रशिक्षण की परम्परा जो गुरुदेव स्थापित कर गये थे, वह अपना कार्य बखूबी निभाती रहेगी । परम पूज्य गुरुदेव ने ब्रह्मकमल के रूप में विकसित, पल्लवित हो जीवन जिया है तो उस जीवन की सुगंध एवं उद्भूत ब्रह्मबीजों से कोई क्षेत्र भला अछूता कैसे रह सकता है।

शांतिकुंज आश्रम का अभी 10 गुना विस्तार होना है





तथा इसको विश्वविद्यालय के रूप में परिणत होना है।



सिद्ध साधना आरण्यक तो यह है ही जिसमें सुसंकारित बीजों को अंकुरित होने के लिए व्यापक मात्रा में ऊर्जा

विद्यमान है। परिजन अगले दिनों बड़ी संख्या में गुरुदेव के कर्त्तत्व रूपी विराटरूप को देखने यहाँ आयेंगे तथा यहाँ से प्रज्ञा आलोक के विस्तार का संदेश लेकर जायेंगे। निःशुल्क छात्रावास, प्रशिक्षण तथा अतिथि सत्कार का क्रम यहाँ पहले की तरह ही चलता रहेगा।

पूज्य गुरुदेव ने अपनी देह परित्याग करने संबंधी पूर्वानुमान की परोक्ष रूप से समय -समय पर किंतु प्रत्यक्षतः दिन विशेष की सूचना देते हुए मई माह के मध्य में घोषित कर दिया था। परिजनों की यह लग सकता है कि ऐसा था तो हमें सूचना दे दी जाती, हम भी अंतिम दर्शन कर लेते, लेकिन उनका निर्देश था कि ऐसा नहीं किया जाय क्योंकि इससे तो परिजनों का मोह काया तक सीमित होकर रह जाता एवं अंत्येष्टि के

बाद वे काया को ही सब कुछ मानते हुए उनके कार्यों को नज़रअंदाज़ करने लगते। गुरुदेव ने जीवनभर तिल-तिल कर अपना जीवन परहित के लिए होम किया है। एक परमार्थी ब्रह्मपरायण जीवन जिया है जिसमें स्वयं पर कड़ा अंकुश लगाया है एवं उदारता-पूर्वक अपनी शक्ति, विभूति, सम्पदा को लुटाया गया। गुरुदेव ने परिजनों से भी यही आशा की है। समय का जो उपयोग उन्होंने किया एवं समाज के हित के लिए जैसा समय का सुनियोजन किया, यदि उसका एक अंश भी हम परिजन अपने जीवन में उतार सकें तो अपना जीवन धन्य कर लेंगे।

गुरुदेव ने अस्सी वर्ष की आयु में 800 वर्ष की आयु में किये जाने योग्य जीवन जिया है। काया कब तक साथ

देती। फिर भी चूंकि संकेत आ चुका था, किसी भी प्रकार की प्याधि न होते हुए भी उन्होंने अपनी चेतना को शरीर के विभिन्न अंगों में सिकोड़ना आरंभ कर दिया था। चूंकि चेतना को मापने का कोई यंत्र अभी तक बना नहीं अतः यह अनुमान लगाना कठिन जा कि रक्त आदि सभी का विश्लेषण एक स्वस्थ व्यक्ति जैसा होते हुए भी वे महाप्रयाण की बात क्यों सोच रहे हैं ? स्थूल दृष्टि से सोचने वाले चिकित्सक जो सोच व कर सकते हैं , वह सब करने का उन्होंने प्रयास किया परन्तु वे उस सीमा से परे थे । महाप्रयाण से एक सप्ताह पहले से ही अन्न आदि कम करते-करते जल भी बिल्कुल बन्द कर दिया था । जब अवसान की बेला आई तो गायत्री माँ को प्रणाम कर स्वयं हृदय की धड़कन बन्द कर दी। सब कुछ

इतना शीघ्र हुआ कि यह कह पाना कि उन्हें कुछ दिन और जीवित रखा जा सकता था, चेतना की सत्ता का मखौल उड़ाने के समान होगा।

परम पूज्य गुरुदेव ने बहुमुखी जीवन जिया है। बाल्यकाल में हिमालय से आये दादा गुरु से साक्षात्कार से लेकर हिमालय यात्रा तक स्वतंत्रता संग्राम सैनानी के नाते, यातना भुगतने से जेल यात्रा तक, परिजनों को स्नेह से ओतप्रोत कर अपना अंग अवयव बनाने तक, एक विश्वव्यापी समाजसेवी संगठन बनाने से लेकर अनगणित भावनाशील लोकसेवियों के निर्माण तक, अपनी चमत्कारी अनुभूतियों द्वारा अनगणित व्यक्तियों को मृत संजीवनी देने से लेकर आत्मविकास संबंधी मार्गदर्शन तक तथा लेखनी द्वारा अपनी चिन्तन चेतना

को जन-जन तक पहुँचाने जैसे कार्यों से भरा पूरा यह विराट व्यक्तित्व रहा है। उनके जीवन पर एक अविस्मरणीय अंक अगले माह अगस्त-सितम्बर के संयुक्तांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। हर परिजन की यह नियमित अंक के रूप में अगस्त अंत तक उपलब्ध हो जायेगा। इसका आकार वर्तमान अखण्ड ज्योति से लगभग चार गुना होगा तथा पूज्य गुरुदेव के व्यक्तित्व एवं कर्त्तत्व संबंधी दुर्लभ चित्र, अनुभूतियाँ एवं लेख उसमें होंगे। परिजन उसकी प्रतीक्षा करें।

पूज्य गुरुदेव ने कहा है कि

"मेरे जाने के बाद शोक न किया जाय क्योंकि मैं शक्ति के रूप में और अधिक विराट परिकर में पहुँच जाऊँगा। सभी को मेरी अनुभूति होती रहेगी।"

उनकी इच्छानुसार ही किसी प्रकार की औपचारिकताएँ यहाँ नहीं की गयीं, रुटीन यथावत रहा क्योंकि शक्ति की कभी मृत्यु नहीं होती। निष्कलंक प्रज्ञावतार के रूप में आया एक मसीहा जिनके सम्पर्क में रहा उन्हें स्वयं को सौभाग्यशाली मानना चाहिए कि वे उनके जीवनकाल में उनसे प्रत्यक्ष वार्ता, नमन आदि का लाभ उठा सके। सच्ची श्रद्धांजलि यही है कि उनके विद्याविस्तार के कार्य को और आगे बढ़ाया जाय, अपना इस समय विशेष पर धरती पर आना सार्थक कर लिया जाय।

ब्रह्मवर्चस